UNIVERSITY OF CAMBRIDGE

ORIENTAL STUDIES TRIPOS Part II

South Asian Studies

Monday 2 June 2008 09.00 – 12.00

SA.18 HINDI TEXTS, 5

*Translate into **English**. Answer **all** questions.*
*All questions carry **equal** marks.*

*Write your number **not** your name on the cover sheet of **each** Section booklet.*

STATIONERY REQUIREMENTS
20 Page Answer Book x 1
Rough Work Pad

You may not start to read the questions printed on the subsequent pages of this question paper until instructed that you may do so by the Invigilator.

1. Translate into English:

प्रेमचंद की परंपरा

प्रेमचंद ने हिंदी कथा-साहित्य को एक नया मोड़ दिया और अपनी उपलब्धियों से उसे प्रगति की नयी मंजिलों तक पहुँचाया। वे कथाशिल्प के आविष्कारक तो नहीं थे, किन्तु हिंदी में उपन्यास और लघुकथा की अल्पविकसित विधाओं को सबल करने में उनका योगदान महत्वपूर्ण था। कहानियाँ उनके पहले भी लिखी जाती थीं और छोटे-बड़े उपन्यास भी। कहानियाँ मुख्यतः घटनाप्रधान होती थीं और एक फार्मूले के अनुसार उनमें नायक और नयिका का चरित्र बहुत उभारकर चित्रित किया जाता था। उनके लिए बहुत उजले रंगों का प्रयोग होता था, खलनायक और खलनायिका, इसके विपरीत, गहरे काले रंग में चित्रित किये जाते थे। कथानक की परिणति पूर्वानुमानित होती थी – सत्य की असत्य पर, बुराई की अच्छाई पर अंत में विजय होती थी। अनेक कहानियों में देशभक्ति और आदर्शवाद की प्रमुखता होती थी और इनमें यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता था जिसमें समाज-सुधार पर ज़ोर था। बालविवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, दहेज, सती, देवदासी आदि की समस्याओं पर कथानक गढ़े जाते थे और कथा के परिणाम में एक स्पष्ट शिक्षा अंतर्निहित होती थी।

बाहर आई उपन्यास की विधा लोकप्रिय हो रही थी, किन्तु भारत के समसामयिक यथार्थ में उसकी जड़ें न गहराई में जा सकी थीं और न फैल सकी थीं। सच तो यह है कि उपन्यास पूरी तरह से भारतीय परिवेश और उसकी भावभूति से अपने-आपको नहीं जोड़ सके थे। बड़े बड़े उपन्यास लिखे गए अथवा उनके अनुवाद हुए और उन्हें पर्याप्त लोकप्रियता भी मिली, परंतु इनमें अधिकांश का भारतीय समाज और उसमें होने वाले परिवर्तनों से कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध नहीं था।

Parampara itihas-bodh aur sanskriti, Shymacaran Dubey, p. 143

2. Translate into English:

बेघर संसार की पुकार

हिंदी की अनेक कला-फ़िल्मों का द्वंद स्नान और सफ़र का द्वंद है। स्नान ताज़गी देता है, पर एक निजी ताज़गी। दुनिया कितनी ही गंदी रहे, स्नान करके आदमी साफ़ हो लेता है। पर्यावरण कितना ही प्रदूषित हो गया है, स्नान से तरावट मिलती ही है। स्नान जीने का सहारा है, चुनौतीभरे संसार में नन्हा-सा आत्मसंतोष। दूसरी तरफ़ सफर है जो आदमी को कष्ट की पूरी जानकारी के बावजूद घर से बाहर ले जाता है। सफ़र के लिए यह भान ज़रूरी है कि घर से निकलना ही होगा क्योंकि घर में दुनिया नहीं है। बाहर तकलीफ़ें हैं, असुविधाएँ हैं और अपनी निजी, परिचित दुनिया का आसरा नहीं है – यह जानते हुए भी मनुष्य सफ़र करता है। संस्कृति की राजनीति के ये दो सिरे हैं – स्नान कराओ या सफर; लोगों को छोटी-सी ताज़गी दो या उन्हें एक जाने-माने कष्ट से फिर गुज़ारो। कलाओं का इतिहास इन्हीं दो सिरों के बीच घूमता है। भक्तिकाव्य ने सफ़र कराया – राम आख़िर एक अथक यात्री थे; रीति काव्य में स्नान-इतना लंबा कि गुसलख़ाने से भागने की तबियत हो आए।

बंबइया सिनेमा एक लंबा स्नान ही है। उसने मध्यवर्गीय हिंदुस्तानी की निजी भावनाओं को निरंतर धोते-चमकाते रहने का ठेका ले रखा है। पर भावनाएँ इतनी उलझी हुई हैं कि कितना भी धो लो, साबुन लगाओ, उनकी लटें नहीं खुलतीं, न ही उनका मैल जाता है।

Vichar ka dar, Krishna Kumar, p. 52.

3. Translate into English:

जंगल के दावेदार

सवेरे नौ बजे बीरसा मर गया। जेल के सुपरिंटेंडेंट हाथ में घड़ी लिए खड़े थे। बीच-बीच में उनकी नब्ज़ देख रहे थे। वह क्षीण, बहुत क्षीण थी। बीरसा की आँखें बंद थीं – कपाल कुछ सिकुड़ा हुआ। ऐंडरसन कुतूहलवश झुके।

अब झुका जा सकता है। जिन गोरे हाथों, गोरी चमड़ी से वह घृणा करता था, वही हाथ उसके चिपचिपाते कपाल, गाल को छूते हैं। उसका चेहरा छूकर ऐंडरसन को आश्चर्य की अनुभूति हुई। यही बीरसा है, जिसके लिए दो ज़िलों की पुलिस और सेना भाग-दौड़ कर रही थी? सुकुमार सुन्दर चेहरा ! कौन कहेगा कि मुंडा का लड़का है? इस समय उसके मुँह पर मौत की छाया है। ऐंडरसन ने उसकी नाड़ी को टटोला। नौ बजे के लगभग नाड़ी क्षीण होते-होते रूक गई। सहसा शरीर लुढक गया। कपाल की रेखाएँ मिट गईं। मुख शांत और स्थिर हो गया। मृत्यु के सिवा और कोई भी शक्ति या घटना बीरसा मुंडा के शरीर में ऐसी अनन्य शांति नहीं ला सकती थी !

नौ बजे वह मर गया। उस समय उसके हाथ-पैर की ज़जीरें खोल दी गईं। जीवित रहने पर इस साथी-रहित कोठरी में जब वह अनजान, बिना चिकित्सा के बीमारी भुगत रहा था, उस समय ज़ंजीरें खोलना संभव नहीं हुआ था। उस पर किसी को विश्वास ही नहीं होता था।

Jangal ke davedaar, Mahashveta Devi, p. 12